अभिलाषाष्टक स्तोत्र

भगवान् शिव के स्तोत्रों में इसका प्रमुख स्थान है। पुत्र-प्राप्ति के लिये इस स्तोत्र की अत्यधिक ख्याति है। 'धर्मसिन्धु:'[1] में पुत्र-प्राप्ति के उपायों में महारुद्र (शतरुद्रिय का पाठ-विशेष) का जप अथवा एक लाख कमल-पुष्पों से शिव-पूजा अथवा प्रतिदिन पार्थिवलिंग की पूजा करके अभिलाषाष्टक स्तोत्र का एक सालतक पाठ आदि बताये गये हैं। यह स्तोत्र विश्वानर मुनि के माध्यम से प्रकट हुआ था। शिव-तुल्य पुत्र की प्राप्ति हेतु विश्वानर मुनि ने वाराणसी में तप के द्वारा भगवान् शिव के वीरेशलिंग की आराधना की थी। एक वर्ष के पश्चात् वीरेशलिंग के मध्य उन्हें शिवजी के बालरूप में दर्शन हुए।

बालकरूप शिव को देखकर विश्वानर मुनि कृतार्थ हो गये और आनन्दके कारण उनका शरीर रोमाञ्चित हो उठा तथा बारंबार 'नमस्कार है, नमस्कार है' यों उनका हृदयोद्गार फूट पड़ा। फिर वे अभिलाषा पूर्ण करनेवाले आठ पद्यों द्वारा बालरूपधारी परमानन्दस्वरूप शम्भुका स्तवन करते हुए बोले।

विश्वानर उवाच –

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किंचित्।
एको रूद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम्।।
कर्ता हर्ता त्वं हि सर्वस्य शम्भो नानारूपेष्वेकरूपोऽप्यरूपः।
यद्वत्प्रत्यग्धर्म एकोऽप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये।।
रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रौप्यं नरैः पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ।
यद्वत्तद्वद्विश्वगेष प्रपञ्चो यस्मिन् ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम्।।
तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः।
पुष्पे गन्धो दुग्धमध्येऽपि सर्पिर्यत्तच्छम्भो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये।।
शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रस्यघ्राणस्त्वं व्यङ्घ्रिरायासि दूरात्।
व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग्वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये।।
नो वेदस्त्वामीश साक्षाद्धि वेद नो वा विष्णुर्नो विधातारिवलस्य।
नो योगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये।।
नो ते गोत्रं नेश जन्मापि नाख्या नो वा रूपं नैव शीलं न देशः।
इत्थम्भूतोऽपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद् भजे त्वाम्।।
त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः।

---

1. **महारुद्रजपो वापि लक्षपद्मैः शिवार्चनम्।** अथवा **प्रत्यहं पार्थिवलिङ्गपूजां कृत्वा अभिलाषाष्टकजपं संवत्सरं कुर्यात्।** (धर्मसिन्धुः, श्रीकाशीनाथोपाध्यायविरचितः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफ़िस, वाराणसी, 1968, पृ. 314)

त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बालस्तत्त्वं यत् किं नास्यतस्त्वां नतोऽहम्।।[1]

(शिवपुराण, शतरुद्रसंहिता, 13/42-49)

विश्वानर ने कहा– भगवन्! आप ही एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म हैं, यह सारा जगत् आपका ही स्वरूप है, यहाँ अनेक कुछ भी नहीं है। यह बिलकुल सत्य है कि एकमात्र रूद्र के अतिरिक्त दूसरे किसी की सत्ता नहीं है, इसलिये मैं आप महेश की शरण ग्रहण करता हूँ। शम्भो! आप ही सबके कर्ता-हर्ता हैं, तथा जैसे आत्मधर्म एक होते हुए भी अनेक रूप से दीखता है, उसी प्रकार आप भी एकरूप होकर नाना रूपों में व्याप्त हैं। फिर भी आप रूपरहित हैं। इसलिये आप ईश्वर के अतिरिक्त मैं किसी दूसरे की शरण नहीं ले सकता। जैसे रज्जु में सर्प, सीपी में चाँदी और मृगमरीचिका में जलप्रवाह का भान मिथ्या है, उसी प्रकार, जिसे जान लेने पर यह विश्वप्रपञ्च मिथ्या भासित होता है, उन महेश्वर की मैं शरण लेता हूँ। शम्भो! जल में जो शीतलता, अग्नि में दाहकता, सूर्य में गरमी, चन्द्रमा में आह्लादकारिता, पुष्प में गन्ध और दुग्ध में घी वर्तमान है, वह आपका ही स्वरूप है, अत: मैं आपके शरण हूँ। आप कानरहित होकर शब्द सुनते हैं; नासिकाविहीन होकर सूँघते हैं। पैर न होने पर भी दूरतक चले जाते हैं, नेत्रहीन होकर सब कुछ देखते हैं और जिह्वारहित होकर भी समस्त रसों के ज्ञाता हैं। भला, आपको सम्यक् रूप से कौन जान सकता है। इसलिये मैं आपकी शरण में जाता हूँ। ईश! आपके रहस्य को न तो साक्षात् वेद ही जानता है न विष्णु, न अखिल विश्व के विधाता ब्रह्मा न योगीन्द्र और न इन्द्र आदि प्रधान देवताओं को ही इसका पता है; परंतु आपका भक्त उसे जान लेता है, अत: मैं आपकी शरण ग्रहण करता हूँ। ईश! न तो आपका कोई गोत्र है न जन्म है, न नाम है न रूप है, न शील है और न देश है; ऐसा होने पर भी आप त्रिलोकी के अधीश्वर तथा सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करनेवाले हैं, इसलिये मैं आपका भजन करता हूँ। स्मरारे! आप सर्वस्वरूप हैं, यह सारा विश्वप्रपञ्च आपसे ही प्रकट हुआ है। आप गौरी के प्राणनाथ, दिगम्बर और परम शान्त हैं। बाल, युवा और वृद्धरूप में आप ही वर्तमान हैं। ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसमें आप व्याप्त न हों; अत: मैं आपके चरणों में नतमस्तक हूँ।

विश्वानर के वचन को सुनकर पावन शिशुरूपधारी महादेव हँसकर शुचि(विश्वानर) से बोले-'शुचे! तुमने अपने हृदय में अपनी पत्नी शुचिष्मती के प्रति जो अभिलाषा कर रखी है, वह निस्संदेह थोड़े ही समय में पूर्ण हो जायगी। महामते! मैं शुचिष्मती के गर्भ से तुम्हारा पुत्र होकर प्रकट

1. यह स्तोत्र वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई द्वारा प्रकाशित स्कंदपुराण के काशीखण्ड(पूर्वार्ध 10/126-133) में भी थोड़े शब्दों के अन्तर के साथ प्राप्त होता है।

होऊँगा। मेरा नाम गृहपति होगा। मैं परम पावन तथा समस्त देवताओं के लिये प्रिय होऊँगा। जो मनुष्य एक वर्षतक शिवजीके संनिकट तुम्हारे द्वारा कथित इस पुण्यमय अभिलाषाष्टक स्तोत्र का तीनों काल पाठ करेगा, उसकी सारी अभिलाषाएँ यह पूर्ण कर देगा। इस स्तोत्र का पाठ पुत्र, पौत्र और धन का प्रदाता, सर्वथा शान्तिकारक, सारी विपत्तियों का विनाशक, स्वर्ग और मोक्षरूप सम्पत्ति का कर्ता तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाला है। निस्संदेह यह अकेला ही समस्त स्तोत्रों के समान है।'

संतान की कामनावाले पति या पत्नी को चाहिये, प्रातः शौच-स्नानादि से निवृत्त हो शिवजी का पूजन करे और इस स्तोत्र का आठ या अट्ठाईस बार पाठ करे। इस प्रकार एक वर्षपर्यन्त पाठ करते रहने से पुत्र की प्राप्ति होती है।

(संक्षिप्त शिवपुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर, शतरुद्रसंहिता अ. 13 तथा धर्मसिन्धुः पर यह लेख आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁

तीर्थादप्यधिकः स्थाने सतां साधुसमागमः।।
पचेलिमफलः सद्यो दुरन्तकलुषापहः।
अपूर्वः कोऽपि सद्गोष्ठी सहस्रकिरणोदयः।।
य एकान्ततयात्यन्तमन्तर्गततमोपहः।
साधुगोष्ठीसमुद्भूतसुखामृतरसोर्मयः।।
सर्वे वराः सुधाशीधुशर्करामधुषड्रसाः।

(स्कन्दपुराणांक माहे. कुमार. 11/5-8)

सच है, साधुपुरुषों का समागम तीर्थ से भी बढ़कर है। उसका परिपक्व फल तत्काल प्राप्त होता है तथा वह दुरन्त पापों का भी नाश करनेवाला है। साधु-सभा(सत्संग) रूपी सूर्य का उदय कोई अद्भुत और अनिर्वचनीय प्रभाव रखता है; क्योंकि वह अन्तःकरण में व्याप्त हुए अज्ञानान्धकार का अत्यन्त विनाश करनेवाला है। साधुसमागम से प्रकट हुए आनंदमय अमृतरस की सभी लहरें श्रेष्ठ हैं तथा वे सुधा, माध्वी, शर्करा और मधु के समान मीठी एवं छः रसों(दास्यरति, सख्यरति, वात्सल्यरति, शान्तरति, कान्तरति तथा अद्भुतरति-भक्तिरस के पोषक ये षड्विधभाव ही यहाँ छः रस बताये गये हैं) से युक्त हैं।